ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 244-246

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

सांस्कृति संघर्श का समाधन संस्कृतियों का सम्मान एवं उत्तरदायित्व

सीमा शुक्ला

असि0 प्रोफे0–समाजशास्त्र विभाग, सरोज विद्याशंकर सरस्वती स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सुजानगंज–जौनपुर (उ0प्र0) भारत

Received- 30.11.2019, Revised- 05.12.2019, Accepted - 09.12.2019 E-mail: hariocomputer@gmail.com

सारांश : *हमारा कर्तव्य है कि हम अन्य संस्कृतियों या सभी संस्कृतियों को बराबर सम्मान दें। हम इसे प्रायः यह समझ लेते है कि इसका तात्पर्य है कि हम अन्य व्यक्यिों का सम्मान करें, लेकिन इसमें अन्य चीजें जैसे – दूसरे की स्वायत्तता का सम्मान करना, इच्छानुसार जीवन को चलाने के अधिकार का सम्मान करना भी आता है। हालांकि यह हमारे उस अधिकार को नहीं छीनता, जिसमें हम अन्य जीवन पद्धतियों का विश्लेषण कर उनकी आलोचना करते है। उनके अच्छे बुरे पहलुओं को उजागर करते है। हमारा यह विष्लेशण उनके विचार धरातल पर आधृत सहानुभूति परक समझ पर आधारित होना चाहिए, नही तो अपनी एकामी विचारधारा से हम उनके साथ न्याय नहीं कर पायेंगे।*

कुंजी शब्द– कर्तव्य, संस्कृतियों, सम्मान, स्वायत्ता, अधिकार, जीवन पद्धति, विश्लेषण, धरातल, पहलुओं, उजागर।

इस संदर्भ में संस्कृति के दो आयाम है पहला, समुदाय जिससे वह संस्कृति सम्बन्धित है एवं दूसरा उस संस्कृति की सामग्री (कन्टेन्ट) एवं चरित्र। अतः किसी संस्कृति का सम्मान करना , उसके समुदाय के अधिकारों एवं उस संस्कृति की सामग्री और चरित्र का सम्मान करना है। इन दोनों आयामों को सम्मान देने के अलग–अलग आधार है। हम प्रथम आयाम का सम्मान करते है, क्योंकि प्रत्येक मनुष्य को यह अधिकार होना चाहिए कि वह कैसी जीवन शैली अपनाएगा जो कि उसको उसके इतिहास एवं पहचान से जोड़ती हो। प्रत्येक समुदाय को अपनी विशिष्ट संस्कृति का पालन करने का अधिकार मिलना मिलना ही चाहिए। यहां असमानता का कोई भी आधार नहीं होना चाहिए।

जब हम संस्कृति की बात करते है, तो इसका सम्मान इस मूल्यांकन पर आधारित होता है कि वह इसके सदस्यों को जीवन का कितना अच्छा आकार प्रदान करती। मनुष्य ऐतिहासिक प्राणी है, उसका विकास अपने सांस्कृति अतीत की समृद्धियों को ही आत्मसात कर लेने से ही होता है। चूंकि प्रत्येक संस्कृति मानव–जीवन को स्थायित्व एवं अर्थ देती है। उसके सदस्यों को बांधे रखती है सृजनात्मक ऊर्जाओं को प्रदर्शित करती है। मानव के विभिन्न अभिवृत्तियों को कलाओं के माध्यम से शान्त करती है इसलिए संस्कृति को सम्मान मिलना ही चाहिए, हालांकि किसी संस्कृति के सावधानी पूर्वक एवं सहानुभूति पूर्ण परीक्षण के बाद हम पा सकते है कि कोई संस्कृति जीवन पद्धति की, जो सम्पूर्ण गुणवत्ता हमें देती है, वह पर्याप्त नहीं है तथा वह वांछनीय गुणवत्ता से कमी रखती है तो हमें उसे अन्य लाभ परक संस्कृतियां की अपेक्षा कम सम्मान देने लगते है। परन्तु सभी संस्कृतियां आधारभूत सम्मान की मांग करती है, क्योंकि प्रत्येक में कुछ न कुछ खास मूल्यवान पहलू जरूर होते है। लेकिन सभी संस्कृतियां सभी के लिए एक समान मूल्यवान एवं गुणवत्तायुक्त नहीं हो सकती है। हमें संस्कृति का मूल्यांकन करते समय सिर्फ अपने ही दृष्टिकोण से उसका परीक्षण नहीं करना चाहिए बल्कि सार्वभौमिक आधारों पर उसकी जीवन शैली को तौलना चाहिए। यदि कोई सांस्कृतिक समुदाय मानवीय मूल्य और अस्मिता को आदर देता है उसके समाधनों के आधार पर मूलभुत मानवीय हित की रक्षा करता है। अन्य समुदाय के लोगों को किसी प्रकार की कोई धमकी नहीं देता है। उसके सदस्य अपनी संस्कृति के गौरव में निष्ठा रखते है और इस कारण सद्जीवन को प्राप्त करने के लिए सभी मूलभूत किसी संस्कृति का आवश्यकताओं की पूर्ति वह संस्कृति करती है तो निश्चय सम्मान करना, उसके समुदाय के ही वह संस्कृति की आदरणीय है।

अधिकारों एवं उस संस्कृति की जो यह मानते है कि कुछ संस्कृतियां श्रेष्ठ होती है सामग्री और चरित्र का सम्मान और अपने मूल्य को अन्य संस्कृतियों में आरोपित करना करना है। चूंकि प्रत्येक संस्कृति उनका अधिकार होता है वह समुदाय के उस अधिकार का मानव–जीवन को स्थायित्व एवं हनन करते है जो उन्हे अपनी मान्यताओं और मूल्यों को अर्थ देती है उसके सदस्यों को चुनने के लिए मिलती है।

बांधे रखती है सृजनात्मक वस्तुत किसी भी समुदाय की सदस्यता उसके ऊर्जाओं को प्रदर्शित करती है। प्रति उत्तरदायित्व की मांग करती है। सांस्कृतिक समुदाय इसलिये प्रत्येक समुदाय को भी इससे अछूता नहीं है। यह उत्तरदायित्व प्रश्न खड़ा अपनी विशिष्ट संस्कृति का करता है कि क्या संस्कृति के प्रति जवाबदेही है ? हाल के पालन करने का

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

अधिकार मिलना वर्षो में कई लेखकों ने विशिष्ट या रोष या तीखेपान के मिलना ही चाहिए। यहां साथ इस प्रश्न को उठाया है। द सटैनिक वर्सेज की असमानता का कोई भी आधार प्रकाशन के बाद एडवर्ड ने सलमान रूश्दी की आलोचना नहीं होना चाहिए। की क्योंकि उन्होंने अपने समुदाय के जन्मजात ज्ञान का प्रयोग पश्चिम के पक्षपात पूर्ण मुस्लिम विरोधी भावना को पुष्ट करने के लिए किया। श्वेत लोगों के सांस्कृतिक एवं नस्लीय भदभाव को बढ़ावा देने के लिए भी कई अफ्रीकी मूल के अमेरिकियों पर भी धोखेबाजी एवं संस्कृति से विदोह करने का आरोप लगाया जाता है। जो अपनी समुदाय की मान्यताओं के लिए खड़े नहीं हुए या फिर दूसरे खेमे में चले गये।

जैसा कि हम देखते है कि संस्कृतिक समुदाय के दो आयाम है पहला सांस्कृतिक एवं दूसरा सामुदायिक जब हम सांस्कृतिक समुदाय के प्रति उत्तरदायित्व एवं वफादारी की बात करते है तो हमारा आशय दोनों आयामों से होता है।

प्रथम दृष्टता, संस्कृति के प्रति उत्तरदायित्व या जवाबदेही का विचार विचित्र लगता है क्योंकि यह स्पष्ट नहीं है कि निर्वेयक्तिक या अमूर्त संकल्पना संस्कृति के साथ मनुष्य का नैतिक सम्बन्ध कैसा हो सकता है। परन्तु जितना विचित्र यह दिखता है उनता है नहीं। हम प्राय वैज्ञानिकों एवं कलाकारों की उनके विज्ञान एवं कला के प्रति कर्तव्य की बात करते है। इसका तात्पर्य है कि उन्हें सम्बन्धित उत्तरदायित्व की केन्द्रीय धारणा एवं मूल्यों के प्रति निष्ठावान रहना चाहिए। एक वैज्ञानिक को सत्य का अनुसरण एवं प्रमाणो को औचित्यपूर्ण परीक्षण्पा करना चाहिए। वही कलाकार को कल्पना के निर्भया अभ्यास एवं कलात्मक सत्य के प्रति जागरूक रहना चाहिए। इसी प्रकार धार्मिक लोग धर्म के सिद्धांतो के प्रति एवं उदारवादी उदारवादी परम्परा कें सिद्धांतों एवं मूल्यों के प्रति वफादार रहने की बात करते है। इसी अर्थ में संस्कृति के प्रति उत्तरदायित्व का तात्पर्य है कि संस्कृति से सम्बन्धित जीवन पद्धति के घटक जैसे मूल्यों आदर्शो महत्व और अर्थ की व्यवस्थओं नैतिक एवं आध्यात्मिक संवेदनाओं के प्रति अपने विश्वास को अडिग रखना।

प्रश्न उठता है कि इस उत्तरदायित्व के आधार की सामग्री क्या है ? जैसा कि हम जानाते है कि संस्कृति हमारे जीवन को गति प्रदान करती है। संसाधनों का उपयोग करना सिखाती है हमारे व्यक्तित्व को स्थिरता प्रदान करती है। इसके मूल्य एवं आदर्श हम प्रेरित करते है। यह परम्पराएं ,गीत कहानियां,साहित्य एवं संगीत हमारे जीवन में खुशियाँ और आनन्द के रंग भरते है। यह हमारे जीवन को पग पग पर निर्देशित करते है और नैतिक एवं आध्यात्मिक बुद्धि प्रदान करके हमें जीवन के कठिन समय के स्थिर रहना सिखाती है। यह सब इगित करता है कि हमारी संस्कृति ने हमारे लिए क्या–कुछ किया है। हम यह भी कह सकते है कि इसके आदर्शो सौन्दर्यात्मक आध्यात्मिक विश्वासों एवं अन्य गतिविधियों एवं उपलब्धियों ने मानव जीवन के मूल्यावान दृष्टिकोण को प्रदर्शित किया है जो कि मानवता के सास्कृतिक और नैतिक पूंजी को समृद्ध करता है।

इस कारण हम सोच सकते है कि संस्कृति के प्रति हमारी वफादारी इसलिए होनी चाहिए क्योंकि हमारे जीवन में असीम योगदान दिया है और शायद इस कारण भी कि इसका एक सार्वभौमिक मूल्य है। अगर हमें लगता हो कि कोई संस्कृति मूल्यहीन है, उसके आदर्श अत्यधिक उत्पीड़क है, हमें अच्छा जीवन जीने की कला सिखाने के लिए उसके पास मूल्य नहीं है वह हमारे बौद्धिक एवं नैतिक एवं बौद्धिक विकास को अवरूद्ध कर सकती है तो हमारी वफादारी निश्चित रूप से उसके प्रति कमजोर होगी। (कोई भी संस्कृति पूर्णतः मूल्यहीन नहीं हो सकती।) लेकिन यदि हमारी संस्कृति मानव जीवन को सवंर्द्धित करने के लिए संसाधनों का उचित प्रयोग बताती है, मानवीय संबंधो को मजबूत करती है इसके सदस्यों के मध्य सत्य, विश्वास को आदि स्थापित करती है एवं सद्गुण तथा शुभ के स्त्रोत के रूप में है तो निश्चित तौर पर उसके प्रति हमारी जवाबदेही बनती है।

यदि हमारी संस्कृति औचित्यपूर्ण या न्यायपूर्ण तरीके से समृद्ध है तो हमारा कर्तव्य है कि हम उन महान पुरूषों की स्मृतियों को हृदय मे संजोए जिन्होंने इसके निर्माण में अपना योगदान दिया और जिन्होंने लम्बे समय के दौरान इसे बनाए रखा। इसके पवित्र आदर्शो का विस्तार एवं प्रदर्शन करें जिसमें कि कृतज्ञता की एवं सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रतिबद्धता का समर्पित भाव हो। हमारा यह भी कर्तव्य है कि हम इसका संवर्द्धन करें एवं आगामी पीढ़ियों को इसकी मूल्यवान बातें समझाएं एवं गलत व्याख्यायित या समझे जाने वाली मान्यताओं का उचित तर्को के साथ समाधान करें। इसके अलावा संस्कृति को तोड़ने वाली एवं आघात पहुचानें वाले कुत्सित प्रयासों से भी इसकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य होना चाहिए। विचारणीय है कि हमें अपनी सांस्कृतिक विरासत के समृद्ध मूल्यों को दूसरी संस्कृति से कमतर समझकर जल्दबाजी में त्यागना नहीं चाहिए। संस्कृति के प्रति उत्तरदायित्व में संसाधनों को उजागर करना, मजबूत करना एवं पुष्ट करना एवं उसकी खामियों को दूर करना भी सम्मिलित है। कोई भी

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

संस्कृति पूर्ण नहीं है वह तो विश्वासों एवं नियमित किया कलापों की एक व्यवस्था है जो कि कुछ मूल्य और आदर्श लोगों के लिए प्रस्तुत करती है। किसी संस्कृति से प्रेम करने का आशय उसकी समृद्धि की कामना करना है जिसमें कि उसकी आलोचना करना एवं दोषों का परिमार्जन करना भी सम्मिलित है।

समुदाय के प्रति उत्तरदायित्व की अवधारणा सामान्यतः सुनने में आती है। यह आदर्शो मूल्यों एवं अन्य सांस्कृतिक घटको के प्रति वफादारी नही है बल्कि उन पुरूषों एवं महिलाओं के पति है जिन्होंने समुदाय का निर्माण किया है। प्रायः हम अपने परिवार विद्यालय, राजनीतिक एवं धार्मिक समुदाय के प्रति उत्तरदायित्व की भावना रखते है। हम उनके प्रति आभारी है क्योंकि यह सब हमें सहयोग, घनिष्ठता, नैतिक एवं भावनात्मक संसाधनों तथा मूलाधारों की संवेदनाओं की एक संरचना प्रदान करते है जो हमारे विभिन्न कार्यो में हमारी सहायता करते है। चूंकि संस्कृति किसी समुदाय द्वारा ही संरक्षित की जा सकती है इसलिए हम संस्कृति को जीवन्त रखने के लिए भी समुदाय के ऋणी रहते है। हमारी वफादारी की भावना उस समय और प्रबल हो जाती है जब बाहरी धमकियों या आक्रमणों या चिंताओं से किसी समुदाय के विखण्डन का खतरा पैदा होता है। जैसा कि यातनादायी एवं पीड़ादायी अनुभवों को यहूदियों ने विनाशकारी संहार के वक्त सहा था। इसी कारण आगे चलकर उनके कर्तव्यों में एक नया आयाम जुड़ा कि उन्हें लाखों लोगों जो कि मृत्यु को प्राप्त हुए थे, की स्मृतियों को तथा उनके मध्य घनिष्ठता को हृदय से संजोए रखना होगा।

सांस्कृतिक संस्था,राजनीतिक दलों, दबाव समूहों आदि की तरह स्वैच्छिक संगठन नही यदि इसे ऐसा समझा जाता है तो यह भ्रामक है। सांस्कृतिक समुदाय मानव की सृजनात्मकता नहीं है बल्कि संघर्षो एवं उपलब्धियों की लम्बी सामूहिक स्मृतियों एवं सुस्थापित व्यवहारों की परम्पराओं से युक्त ऐतिहासिक समुदाय है। हम इनसे जुड़ते नहीं बल्कि इनमें पैदा होते है। हम इनके सदस्य नही बल्कि भाग होते है। हमारे संगठन की पहचान निर्वाचन से होती है जबकि सांस्कृतिक पहचान हमें विरासत से मिलती है।

सांस्कृतिक संगठन मानव–जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करता है जो कि स्वैच्छिक संगठन कभी नहीं कर सकते। यह इसके सदस्यों को अस्तित्व परक स्थायित्व,प्राचीन एवं आधुनिक उद्गम की भावनाओं से जुड़ाव संचार की सरलता एवं अन्य लाभ प्रदान करती है। हमारे जीवन में स्वैच्छिक संगठनों एवं सांस्कृतिक समुदाय दोनों का पूरक स्थान है और मानवीय ज्ञान तथा मेधा तभी उभरकर सामने आयेगी जब ये दोनों सहभागी होकर कार्य करेंगे।

किसी सांस्कृति समुदाय के प्रति वफादारी कुछ कर्तव्यों की ओर इंगित करती है जो कि संस्कृति के प्रति वफादारी के कर्तव्यों से भी मेल खाती है या समानता रखती है। यह कर्तव्य किसी समुदाय के सदस्यों के प्रति होती है न कि संस्कृति के आदर्शो के प्रति। यह वफादारी तब भी रहती है जब हम किसी संस्कृति को अस्वीकार कर देते है। नियमों–कानूनों, धाराओं, मूल्यों, व्यवाहारों की संरचना , जो कि किसी समुदाय की रचना करती है, एक लम्बी समय से निर्मित होती है। हम उसे प्राप्त करते है, लाभाविन्त होते है और उसका परिवर्धन करते अपने निहित स्वार्थो के लिए समुदाय को चोट पहुचाना एक घृणित कार्य है। इसलिए हमारा कर्तव्य है कि हम विभिन्न आक्षेपों और गलत व्याख्याओं का उत्तर निर्भीकतापूर्वक आलोचनाकारों को दें। समुदाय के प्रति हो रहे अन्याय के प्रति लड़ना और न्याय दिलाना भी हमारा कर्तव्य होता है महात्मा गांधी अपने समुदाय से अत्यत प्रेम करते थे इसलिए व अरपृश्यता द्वारा विवाह एवं जाति–विभेद आदि सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के लिए प्रतिबद्ध थे। हमारा भी उत्तरदायित्व अपने समुदाय की प्रचलित लाभकारी परम्पराओं को पुष्ट करना व हानिकारक विश्वासों को उन्मूलित करना होना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1 Storey jhon: what is cultural Studies ? A Reader.Bloomsbury Academic,1996,Page - 247
2 डॉ देवराज : दर्शन धर्म अध्यात्मक और संस्कृति, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली 2005 (पेज–170)।
3 Parekh Bhikhu, Rethinking Multiculturalism- Cultural Diversity and Political Theory, Palgrave Macmillan, 2005.Page-145-46.
4 डॉ. कार्टन डेविड सी : जब दुनिया में निगमों का राज चलें, आजादी बचाओ आन्दोलन प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002, पेज 235।

*****